व्सेवोलोद गार्शिन

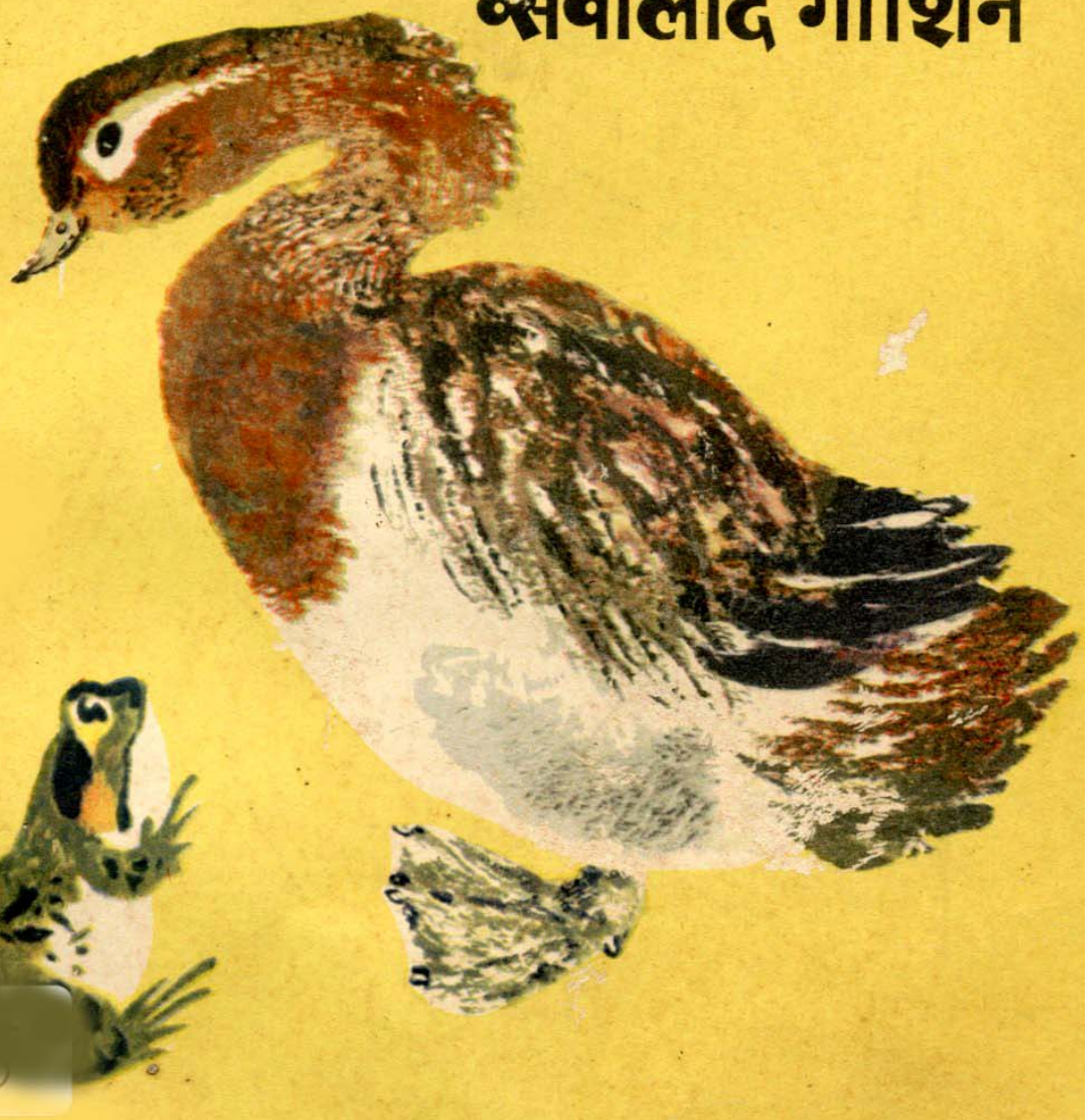

सैलानी मेंढक

व्सेवोलोद गार्शिन

सैलानी मेंढक

चित्रकार : निकीता चरूशिन
अनुवादक : योगेन्द्र नागपाल

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

रादुगा प्रकाशन
मास्को

एक था मेंढक। रहता था दलदल में, खाता था कीड़े-मकोड़े, मक्खी-मच्छर। बसंत में दूसरे मेंढकों के साथ ज़ोर-ज़ोर से टर्राता था। बस ऐसे ही चैन से उसकी सारी ज़िंदगी बीत जाती, बशर्ते कोई सारस-वारस उसे न खा जाता। पर तभी एक बात हुई।

एक बार मेंढक पानी में से निकले हुए ठूंठ पर बैठा था और झीनी-झीनी बरखा का मज़ा ले रहा था।

"वाह, कितना प्यारा मौसम है! भीगा-भीगा! कितना आनन्द है इस दुनिया में!" मन ही मन वह सोच रहा था।

उसकी चिकनी चितकबरी पीठ पर हल्की-हल्की बारिश पड़ रही थी। पानी की बूंदें फिसलकर पेट और पंजों के नीचे आ जाती थीं। वाह, कितना अच्छा लगता था यह, इतना अच्छा कि मेंढक का दिल हुआ खुशी से टर्राए, पर अच्छा हुआ, उसे याद आ गया कि अब तो पतझड़ का मौसम है और पतझड़ में मेंढक टर्राते नहीं, इस काम के लिए बसंत जो है। सो वह चुप रहा और बारिश का आनन्द लेता बैठा रहा।

अचानक हवा में पतली सीटी की सी आवाज़ रह-रहकर गूंजने लगी। ऐसी बत्तखें होती हैं: जब वे उड़ती हैं, तो उनके पंख हवा को चीरते हुए गाते से, या यह कहें कि सीटी बजाते से लगते हैं। जब बत्तखों की डार ऊपर से गुज़र रही हो, तो हवा में सू-सू, सू-सू की ध्वनि सुनाई देती है, और बत्तखें इतनी ऊपर उड़ती हैं कि दिखाई भी नहीं देतीं। इस बार बत्तखों ने हवा में विशाल अर्द्धवृत्त बनाया और उसी दलदल पर उतर आईं, जिसमें मेंढक रहता था।

"कैं-कैं!" एक बत्तख बोली। "अभी बहुत दूर जाना है। पेट भर लें!"

मेंढक तुरन्त छिप गया। वैसे तो उसे पता था कि बत्तखें इतने बड़े, इतने मोटे मेंढक को नहीं खाएंगी, पर फिर भी उसने छिप जाना ही बेहतर समझा और डुबकी लगाकर ठूंठ तले दुबक गया।

पर फिर कुछ सोचकर उसने अपना उभरी-उभरी आंखोंवाला सिर पानी से बाहर निकाला: उसे इस बात का बड़ा कौतूहल हो रहा था कि बत्तखें जा कहां रही हैं।

"कैं-कैं!" दूसरी बत्तख ने कहा! "ठंड पड़ने लगी है! जल्दी से दक्षिण को चलो! दक्षिण को!"

और सारी बत्तखें उसकी हां में हां मिलाते हुए कैं-कैं करने लगीं।

"बत्तखो देवियो", मेंढक ने हिम्मत करके कहा, "यह दक्षिण क्या है जहां आप जा रही हैं? माफ़ करना आपको, देवियों को परेशान कर रहा हूं।"

यह सुनते ही बत्तखों ने मेंढक को घेर लिया। पहले तो उनका दिल हुआ कि उसे खा लें, फिर हर बत्तख ने सोचा कि मेंढक तो बहुत बड़ा है, गले में फंस जाएगा। तब वे सब पंख फड़फड़ाने और चिल्लाने लगीं:

"बड़ा अच्छा है दक्षिण! वहां गर्मी है! इतने अच्छे दलदल हैं वहां! कैसे केंचुए हैं वहां! बहुत अच्छा है दक्षिण!"

उनके शोरगुल से मेंढक के कान फटे जा रहे थे। बड़ी मुश्किल से उसने उन्हें चुप कराया और एक बत्तख से, जो उसे औरों से मोटी और ज़्यादा अक्लमंद लगी, दक्षिण के बारे में बताने को कहा। और जब उसने दक्षिण की बातें सुनाईं, तो मेंढक का दिल बल्लियों उछलने लगा, पर चूंकि वह हर काम में सावधानी बरतता था, सो आखिर में उसने पूछा:

"वहां मच्छर-मक्खियां बहुत हैं?"

"झुंड के झुंड!" बत्तख ने जवाब दिया।

"टर्र!" मेंढक ने कहा और झट से मुड़कर देखा कि दूसरे मेंढक तो नहीं हैं, जो पतझड़ में उसका टर्राना सुनकर उसकी निंदा कर सकते थे। वह एक बार टर्राए बिना नहीं रह सकता था। "मुझे अपने साथ ले चलो!"

"वाह, क्या बात कही है!" बत्तख बोली। "तुम्हें हम कैसे ले जाएंगी? तुम्हारे पंख तो हैं नहीं।"

"तुम कब जा रही हो?" मेंढक ने पूछा।

"जल्दी ही, जल्दी ही!" सब बत्तखें एक साथ चिल्लाईं। "कैं-कैं! कैं! कैं! यहां ठंड है। दक्षिण चलो! दक्षिण चलो!"

"बस पांच मिनट के लिए मुझे सोच लेने दो," मेंढक ने कहा, "मैं अभी आता हूं, मैं ज़रूर कोई अच्छा उपाय सोच लूंगा।"

और वह उस ठूंठ से, जिस पर वह फिर से चढ़ बैठा था, पानी में कूद गया और काई में घुस गया, ताकि किसी इधर-उधर की चीज़ की ओर उसका ध्यान न जाए। पांच मिनट बीत गए, बत्तखें उड़ ही चली थीं, पर तभी उस ठूंठ के पास ही, जिस पर मेंढक बैठा था, पानी में उसका थूथना दिखाई दिया और यह थूथना खुशी से इतना दमक रहा था, जितना मेंढक का थूथना दमक सकता है।

"मैंने सोच लिया! उपाय सोच लिया!" वह बोला। "तुम में से दो बत्तखें अपनी

चोंच में एक टहनी ले लें और मैं बीच में उसे पकड़कर लटक जाऊंगा। तुम उड़ोगी और मैं सवारी करूंगा। बस तुम कैं-कैं मत करना और मैं टर्राउंगा नहीं, तब सब बहुत बढ़िया रहेगा।" बत्तखों ने उसकी बुद्धिमत्ता की बड़ी सराहना की।

चुप रहना और तीन हज़ार मील तक मेंढक को ढोना कोई मज़े की बात नहीं थी, पर उसकी सूझबूझ पर बत्तखों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा था और वे उसे ले जाने

को तैयार हो गईं। उन्होंने तय किया कि बारी-बारी से दो-दो घंटे बत्तखें टहनी पकड़े रहेंगी और चूंकि बत्तखें बहुत थीं और मेंढक एक ही था, इसलिए बारी जल्दी आनेवाली नहीं थी। उन्होंने एक मज़बूत टहनी ढूंढ़ी, दो बत्तखों ने उसे चोंच में पकड़ा, मेंढक टहनी को बीच में मुंह से पकड़कर लटक गया और बत्तखों की डार उड़ चली। बत्तखें मेंढक को इतनी ऊंचे उड़ा ले चलीं कि ऊंचाई से उसका कलेजा डूबा जाता था; इसके अलावा बत्तखें एक बराबर नहीं उड़ रही थीं और टहनी हिला रही थीं, बेचारा मेंढक हवा में झूल रहा था और पूरे ज़ोर से जबड़े भींच रहा था, ताकि टहनी छूट न जाए और वह गिर न पड़े। पर शीघ्र ही वह अपनी स्थिति का आदी हो गया और इधर-उधर देखने लगा। वे तेज़ी से खेतों, मैदानों, नदियों, पहाड़ों के ऊपर उड़ते जा रहे थे। वैसे उसके लिए यह सब देखना मुश्किल ही था, क्योंकि टहनी पर लटके हुए, उसकी नज़र पीछे को और थोड़ी ऊपर को जाती थी, पर फिर भी कुछ-कुछ उसे दिखाई था और वह खुशी से फूला न समा रहा था।

"वाह, कितनी अच्छी तरकीब सोची है मैंने," वह मन ही मन सोच रहा था।

बत्तखें मेंढक को ले जा रहे जोड़े के पीछे उड़ रही थीं और कैं-कैं करती हुई मेंढक की प्रशंसा कर रही थीं।

"कितना समझदार है हमारा मेंढक," वे कह रही थीं, "बत्तखों में भी कोई-कोई ही इतना बुद्धिमान होता है।"

मेंढक का बड़ा जी किया कि उनका आभार प्रकट करे, पर उसे याद आ गया कि मुंह खोलेगा, तो इतनी ऊंचाई से नीचे जा गिरेगा, सो उसने और भी ज़ोर से जबड़े

भींच लिए और मन पक्का करके चुपचाप सुनता रहा। इस तरह वह सारा दिन हवा में झूलता रहा ; उसे ले जा रही बत्तखें उड़ते-उड़ते ही बारी बदल रही थीं, नया जोड़ा बड़ी फुर्ती से टहनी पकड़ लेता था ; मेंढक को तब बहुत डर लगता, कई बार वह डर

के मारे टर्राते-टर्राते रह गया। ऐसे चुप रहने के लिए बड़ी हिम्मत चाहिए थी और मेंढक सचमुच हिम्मतदार था। सांझ ढले सारा झुंड एक दलदल पर उतरा। पौ फटते ही बत्तखें मेंढक को लेकर आगे उड़ चलीं। पर इस बार मेंढक पीठ और सिर आगे तथा पेट पीछे करके लटका – ताकि रास्ते में क्या हो रहा है, यह अच्छी तरह देख सके। बत्तखें कटे हुए खेतों, पीले पड़ गए जंगलों और गांवों के ऊपर से उड़ रही थीं। किसानों के खलिहानों में अनाज भरा हुआ था, वहां से लोगों की आवाज़ें और ज़ंजीरों की पटापट सुनाई दे रही थी। किसान ज़ंजीरों से पीट-पीट कर अनाज मांड रहे थे। लोग बत्तखों की डार को देखते, डार उन्हें कुछ अजीब सी लगती और वे उंगली उठा-उठाकर उधर दिखाते। मेंढक का बड़ा जी हुआ कि बत्तखें ज़मीन के पास उड़ें, ताकि वह सुन सके कि लोग क्या कहते हैं। बत्तखें जब आराम करने को रुकीं तो उसने कहा :

"क्या हम थोड़ा नीचे नहीं उड़ सकते? ऊंचाई से मेरा जी घबराता है, मुझे डर है कहीं मुझे चक्कर आ गए, तो गिर ही न पड़ूं।"

भली बत्तखें नीचे उड़ने पर राज़ी हो गईं। अगले दिन वे इतनी नीचे उड़ रही थीं कि लोगों की आवाज़ें साफ़ सुनाई दे रही थीं।

"देखो, देखो, बत्तखें मेंढक को ले जा रही हैं।" एक गांव में बच्चे चिल्ला रहे थे।

यह सुनकर मेंढक का दिल बल्लियों उछलने लगा।

"देखो रे देखो, कैसा कमाल है!" दूसरे गांव में बड़े लोग चिल्लाए।

"क्या इन्हें पता है कि यह उपाय मैंने सोचा है, बत्तखों ने नहीं?" मेंढक ने मन ही मन सोचा।

"देखो रे देखो? क्या कमाल है!" तीसरे गांव में लोग चिल्ला रहे थे। "किसने यह चतुराई सोची है?"

अब मेंढक से न रहा गया, सारी सावधानी भूलकर वह पूरे ज़ोर से चिल्लाया :

"मैंने! मैंने!"

और चिल्लाने के साथ ही वह कलाबाज़ियां खाता हुआ नीचे गिर चला। बत्तखें ज़ोर से चिल्लाईं : एक बत्तख ने तो उड़ते-उड़ते मेंढक को चोंच से पकड़ने की कोशिश भी की, पर सफल नहीं हुई। मेंढक चारों पंजे झटकता हुआ तेज़ी से नीचे जा रहा था : पर चूंकि बत्तखें बहुत तेज़ी से उड़ रही थीं, इसलिए मेंढक भी उस जगह नहीं गिरा, जहां पर वह चिल्लाया था और जहां सड़क थी, बल्कि उससे बहुत आगे जाकर गिरा। यह मेंढक की खुशकिस्मती ही थी, क्योंकि वह गांव के बाहर गंदे पोखर में जाकर गिरा।

जल्दी-जल्दी वह पानी से बाहर निकला और फिर से गला फाड़कर चिल्लाने लगा :

"मैंने सोचा है! मैंने सोचा है यह उपाय!"

लेकिन उसके इर्द-गिर्द कोई भी नहीं था। अचानक ज़ोरदार छपाका होने के कारण

पोखर के सारे मेंढक पानी में दुबक गए थे। जब उन्होंने पानी से सिर निकाला तो नए मेंढक को देखकर बड़े हैरान हुए।

और नए मेंढक ने उन्हें बड़ी मज़ेदार कहानी सुनाई कि वह कोई मामूली मेंढक नहीं, बल्कि सैलानी मेंढक है, सारी उम्र सोच-सोचकर उसने दुनिया की सैर करने का नया उपाय निकाला है – बत्तखों की सवारी का उपाय ; कि उसके पास अपनी बत्तखें थीं, जो जहां वह कहता वहीं उसे ले जाती थीं, कि वह दक्षिण में गया था, जहां इतने अच्छे दलदल हैं और झुंड के झुंड मक्खी-मच्छर और दूसरे कीड़े-मकोड़े हैं।

"मैं यहां यह देखने आया हूं कि तुम लोग कैसे रह रहे हो। बसंत तक मैं यहां रहूंगा, जब तक कि मेरी बत्तखें नहीं लौट आतीं। अभी मैंने उन्हें छुट्टी दे दी है," अंत में मेंढक ने कहा।

पर बत्तखें फिर कभी वापस नहीं आईं। वे सोच रही थीं कि मेंढक ज़मीन पर गिरकर मर गया और उन्हें उस पर बड़ा तरस आ रहा था।

Kamgar Prakashan
B-4838, Street No.-112, Sant Nagar
Burari, Delhi-110084, M.: 9212504960
Website: kamgarprakashan.com

V. Garshin
The Frog Went Travelling
in Hindi

© हिन्दी अनुवाद ० रादुगा प्रकाशन ० १९८२

Г $\frac{70802\text{-}117}{031(01)\text{-}82}$ 382-83

4803010101